

भगत नामदेव – सबद ५१
लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥
रागु बसंतु, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११९६

लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥
काइआ डूबै केसवा ॥१॥
संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥
तारि लै बाप बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥
अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥
तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥२॥
होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥
पारि उतारे केसवा ॥३॥
नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥
मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥४॥२॥

सार: अनियंत्रित इच्छा मन की स्थिरता और स्पष्टता को भंग कर सकती है। जो आरंभ में साधारण चाहत लगती है, वह पूरी न होने पर बेचैनी और ख़ालीपन का कारण बन सकती है। जब हम किसी चाहत को एक अस्थायी भावना के बजाय अपनी पहचान का मुख्य हिस्सा मान लेते हैं तब मन की उथल-पुथल बढ़ जाती है। हर इच्छा पर तुरंत कार्रवाई करने को रोककर हम समझदारी विकसित करते हैं, इससे हमें सोचने-समझने, रुकने और उन चीज़ों को छोड़ने का मौक़ा मिलता है जो हमारे आध्यात्मिक विकास में सहायक नहीं हैं। आत्म-चिंतन और विनम्रता को अपनाकर हम सच्चे अनुभव-आधारित सीख को बढ़ावा देते हैं जिससे हमारी सोच अधिक स्पष्ट होती है। यह प्रक्रिया दिखाती है कि वास्तविक स्वतंत्रता तब मिलती है जब हम जुनून या मोह से हटकर मन की आंतरिक शांति की अवस्था में आ जाते हैं।

लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥

लालच की लहरें ज़ोर-शोर से और लगातार उठती रहती हैं। यह बताता है कि तीव्र इच्छा ऐसी निरंतर चलने वाली आंतरिक आवाज़ है जो पूरे ध्यान पर छा जाती है और सही- ग़लत को समझने की शक्ति को कमज़ोर कर देती है।

काइआ डूबै केसवा ॥ १॥

हे केशव, सर्वव्यापी, अभय शक्ति, यह शरीर और मन डूब रहे हैं। यह आत्म-जागरूकता में कमी की ओर इशारा करता है जब भौतिकवाद का भ्रम अंतरात्मा पर भारी पड़ जाता है। (१)

संसारु समुंदे तारि गुबिंदे ॥

हे गोविंद, सर्वव्यापी, पालन-पोषण करने वाली शक्ति, इस सांसारिक उथल-पुथल के सागर से पार ले चलिए। यह जीवन की उथल-पुथल के बीच स्थिरता पाने की इच्छा को दर्शाता है ताकि मन और अंतरात्मा उसमें खो न जाएं।

तारि लै बाप बीठुला ॥ १॥ रहाउ ॥

हे बिठुला, हे माता-पिता के समान सर्वसमावेशी और जीवन को धारण करने वाले स्रोत, मुझे सहारा देकर पार ले चलो। यह पुकार आत्मा से है जो एकमात्र ऐसी शक्ति है जिसमें जागरूकता पाकर मन को ऊंचा उठाने और विकसित करने की क्षमता है। (१)(विराम)

अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥

हवा बहुत तेज़ है और मैं इस नाव को चला नहीं सकता। यह ईमानदारी से अपनी अपर्याप्त शक्ति को स्वीकार करना है, विशेषकर उस अहं के सामने जो संस्कारों, इच्छाओं और भय से उत्पन्न होता है और मन को नियंत्रित करता है।

तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥२॥

हे विट्ठल, सर्वव्यापी चेतना, मुझे आपका किनारा नहीं मिला। यह बताता है कि विचारों की स्पष्टता के बिना, केवल शारीरिक प्रयासों से अस्तित्व के सार को समझना मन के लिए असंभव है। (२)

होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥

सत्य और आध्यात्मिक ज्ञान से उत्पन्न आंतरिक करुणा मेरे भीतर जागृत हो और मैं उस सर्वव्यापी चेतना से जुड़ जाऊँ। यह आत्म-कृपा के रूप में ग्रहणशीलता का संकेत देता है जो ज्ञान और नई दिशा की ओर बढ़ने का द्वार खोलता है।

पारि उतारे केसवा ॥३॥

हे केशव, हे सर्वव्यापी धर्मनिष्ठ ऊर्जा, मुझे उस पार ले चलो। यह द्वैत में डूबने की स्थिति से निकलकर चेतना के किनारे तक पहुँचने की चाहत को दर्शाता है। (३)

नामा कहै हुउ तरि भी न जानउ ॥

नामदेव कहते हैं कि मुझे तो तैरना भी नहीं आता। यह अहं पर विजय पाने में असमर्थता और चेतना की कमी को स्वीकार करने वाले विनम्र भाव को दर्शाता है।

मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥४॥२॥

हे विट्ठल, सर्वव्यापी चेतना, मुझे अपना सहारा दें। यह आध्यात्मिक मार्गदर्शन पाने, अनुभव से सीखने और अहं व भ्रम की गहरी खाई से अंतरात्मा को बाहर निकालने के लिए आंतरिक सहारे को मज़बूत करने की इच्छा को दर्शाता है। (४)(२)

तत्त्व: भगत नामदेव इशारा करते हैं कि जब जागरूकता की कमी होती है तब अहं की लहरें हमें पूरी तरह अपनी चपेट में ले सकती हैं। वह कहते हैं कि अहं का मतलब है बिना किनारा देखे और बिना तैरना जाने किसी तूफ़ान में फँस जाना। वह हमें याद दिलाते हैं कि जब नाव डूब रही हो तब एकमात्र उपाय यही बचता है कि हम सच्चे मन से उस सहारे को पुकारें जो हमेशा हमारी पहुँच में है। इसी

तरह, जब अहं हमें भ्रम में डुबो देता है तब हम आध्यात्मिक ज्ञान से मिली उस समझ का सहारा ले सकते हैं जो हम सबमें एक ही सच्चाई होने का एहसास कराती है। यहाँ मुख्य सीख यह है कि हमें मुश्किल तकनीकों में माहिर होने की ज़रूरत नहीं है बल्कि होशपूर्वक अनुभव से सीखने का आसान तरीका हमारी जागरूकता को बढ़ा सकता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com